

पारदेश्वरी साधना



ॐ मनस चेतना केन्द्र, जोधपुर ५१

एस-सीरिज

अमृत बूंद पड़ी तन-मन पर

ये मात्र कैसेट ही नहीं हैं,
अपितु जीवन के, साधना के पग-पग
पर मार्गनिर्देश करने का एक सशक्त माध्यम
हैं पूज्य गुरुदेव की वाणी में—

ऑडियो कैसेट प्रति - 30/-

गुरु गीता
गुरु हमारो गोत्र है
गुरु गति पार लगावे
गुरु मोरो जीवन आधार
गुरु पादुका पूजन
दुर्लभोपनिषद
कठोपनिषद
शिष्योपनिषद
प्रेम धार तलवार की
प्रेम न हाट बिकाये
अकथ कहानी प्रीत की
पिव बिन बुझे न प्यास

वीडियो कैसेट प्रति - 200/-

सिद्धाश्रम
कुण्डलिनी
स्वर्णदेहा अप्सरा
लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग
पाशुपतास्त्रेय
शिव पूजन
अक्षय पात्र साधना
मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूँ
कुण्डलिनी जागरण की झलक
तंत्र के गोपनीय रहस्य
हिप्नोटिज्म रहस्य
साधना, सिद्धि एवं सफलता

सम्पर्क

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),
फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

पारदेवश्वरी साधना

आशीर्वाद

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

© मनस चेतना केन्द्र

संकलन, सम्पादन : नन्दकिशोर श्रीमाली

प्रकाशक

मनस चेतना केन्द्र

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

प्रथम संस्करण : चैत्र नवरात्रि 1995

मूल्य : 5/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आधुनिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का ताल्लय यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पुस्तिका परिवार इस सम्बंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	पारदेश्वरी साधना	०६
२.	पारद शिवलिंग	१६
३.	रसेश्वरी दीक्षा	३१
४.	पारदेश्वर	३६

एस-सीरिज

दो शब्द

अरविन्द प्रकाशन द्वारा कुछ माह पूर्व ही लघु पुस्तकें प्रकाशित करने की अभिनव योजना प्रारम्भ की गई थी। प्रथम दो सेट अत्यधिक लोकप्रिय होने के कारण एस-सीरिज के अन्तर्गत इस तृतीय सेट को एक प्रकार से समय से पूर्व ही प्रकाशित करना पड़ रहा है, अभी तक आध्यात्मिक और साधना-जगत् के कौतूहलों एवं रोचक विवरणों से भरी पुस्तकें इस रूप में प्रकाशित नहीं हुई थीं, किन्तु इस नूतन प्रयास द्वारा एक नई परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ, जिससे पाठक वर्ग ने भी बोझिलता और उबाऊ शास्त्रीय विवरणों के स्थान पर सरल और सहज भाषा में प्रामाणिक विवरणों के साथ वास्तविक अनुभूतियों को पढ़कर लाभ प्राप्त किया, और वह भी सब कुछ मनोरंजक व सरस ढंग से।

हमारा प्रयास रहा है कि रोचकता व यथार्थपरकता का सुखद समन्वय कर पाठक वर्ग में साधना के प्रति नई धारणा विकसित की जाए। प्रथम दो सेट की हाथोंहाथ बिक्री हो जाना इस प्रयास की सफलता को सूचित करता है।

वास्तव में आज भी पाठक वर्ग अच्छे व ज्ञानात्मक साहित्य के लिए आग्रहशील है ही। अन्तर रुचियों में नहीं आया है वरन् अन्तर यह हो गया है कि अब समय की न्यूनता होने के कारण उसके पास समय नहीं है कि वह जटिल व गम्भीर अध्ययन कर सके। ये लघु पुस्तकें इसी समस्या का निदान करने में सहायक हैं, इनमें उन्होंने साधना विधियों का प्रामाणिक व अनुभव सिद्ध वर्णन किया गया है,

जो कि शास्त्रीय ग्रन्थों में अन्यथा ३० व ४० पृष्ठों में प्राप्त होता है।

इस प्रस्तुत सेट में भी पूर्व दो सेट की भाँति ही आध्यात्मिक व व्यवहारिक जीवन की स्थितियों को साथ लेते हुए आठ पुस्तकें प्रस्तुत की जा रही हैं, जिससे पाठक का बहुविध मनोरंजन हो सके — **‘मैं सुगन्ध का झोंका हूँ’** पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों पर आधारित श्रेष्ठ आध्यात्मिक पुस्तक है, **‘बगलामुखी साधना’** में शत्रु संहार एवं अनिष्ट निवारण की प्रामाणिक विधियाँ दी गई हैं, **‘शक्तिपात’** व्यक्ति के अन्दर निहित परालौकिक ज्ञान की क्षमता को स्पष्टता से उजागर करती है, **‘सनसनाहट भरा सौन्दर्य’** सौन्दर्य साधना से सम्बन्धित विशिष्ट व व्यवहारिक पुस्तक है, **‘श्री यंत्र साधना’** जीवन में अतुलनीय सम्पदा को प्राप्त करने व उसे स्थायी बनाकर रखने का मार्ग स्पष्ट करती है, भगवान गणपति का भारतीय जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, और इन्हीं की प्रामाणिक साधना-उपासना **‘गणपति साधना’** के अन्तर्गत प्रस्तुत की जा रही है, **‘सरस्वती साधना’** के अन्तर्गत देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से विशिष्ट वरदायक स्वरूप का वर्णन उपयोगी साधनाओं सहित निहित है, **‘पारदेश्वरी साधना’** स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया में आधारभूत देवी की साधना विधि है।

इस प्रकार यह तृतीय सेट भी पूर्व के दो सेट की ही भाँति सुविज्ञ पाठकों का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञान-लाभ कराने में तथा व्यवहारिक जीवन में सहायक सिद्ध होगा, ऐसी ही हमारी मनोकामना है और समस्त पाठकों के प्रति शुभकामना भी।

पारदेश्वरी साधना

पारद जीवन का और समस्त सृष्टि का आधार है, जैसे शरीर में आत्मा है, वैसे ही संसार में रस अर्थात् पारद है, जो इसको भली-भांति समझ लेता है, वही संसार में विजय प्राप्त करता है, 'रसोपनिषद्' के पंचदश अध्याय में कहा है—

यथा रसस्तथा ह्यात्मा, यथा ह्यात्मा तथा रसः।

आत्मविद् रसविच्चैव, द्वाविमौ सूक्ष्मदर्शिनौ॥

रस को सिद्ध करने के लिए प्राचीन काल से कार्य होता रहा है, और उन्होंने इसमें सफलता भी पाई है, क्योंकि यही एक ऐसी धातु है, जो सर्वथा निर्लेप और निर्मुक्त रहती है, आसानी से इस धातु में दूसरी धातु का समावेश नहीं होता, परंतु यदि इसके सोलह संस्कार किए जाएं, तो यह धातु संसार की अद्वितीय धातु बन जाती है।

धर्मार्थमुपभोगानां नष्टराज्यविवृद्धये।

आयुर्यौवनलाभार्थं मुक्त्यर्थं मुमुक्षुणाम्॥

अर्थात् यह पारद विद्या जनता को धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति कराती है, धन के सदुपयोग के द्वारा सुख की वृद्धि देती है, राजाओं को नष्ट राज्य की प्राप्ति कराती है और राज्य वृद्धि में भी सहायता प्रदान करती है, इसके अतिरिक्त रस विद्या के द्वारा गृहस्थ व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त कर अन्तिम क्षण तक यौवनमय बना रहता है।

इससे यह स्पष्ट है, कि रस विद्या सामान्य विद्या नहीं है, क्योंकि एक ओर जहां यह न्यूनतम व्यय पर सोने या चांदी में परिवर्तित हो जाती है, वहीं दूसरी ओर आयुर्वेद की दृष्टि से यदि इसका उपयोग किया जाए, तो इसके माध्यम से कायाकल्प किया जा सकता है, शरीर की रचना में परिवर्तन हो सकता है, बुढ़ापे को दूर कर शरीर को स्वस्थ, यौवनमय बनाए रखा जा सकता है, और यह संसार की समस्त बीमारियों को दूर करने में सहायक हो सकता है।

अर्थात् पारद समस्त रोगों को दूर करने में सहायक है, यहां तक कि यदि व्यक्ति मूर्च्छित या मृतवत् हो गया हो, तब भी इसके द्वारा उसे पुनर्जीवन प्रदान किया जा सकता है, इसके द्वारा 'खेचरी विद्या' सिद्ध की जा सकती है, जिससे व्यक्ति अदृश्य रह सकता है या वायुवेग से सशरीर एक स्थान से दूसरे

स्थान तक जा सकता है, यह शम्भू बीज है, अतः समस्त देवता-मुनि, साधकों और आयुर्वेद के आचार्यों द्वारा यह वन्दित है, जीवन की पूर्णता तथा भवसागर को पार करने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को एक साथ प्रदान करने में यह विद्या समर्थ है।

रसमंजरी में लिखा है—

रस बन्धश्च स धन्यः प्रारम्भे यस्य सततमिव ।
करुणा रसे करिष्ये महीमहं निर्जरामरणम् ॥

अर्थात् पारद के बन्धन को धन्य है, क्योंकि यह मृत होकर के ही पूरी पृथ्वी को प्राण दे सकता है, यह सिद्ध होकर पृथ्वी को जरा-मरण से मुक्ति दे सकता है, इसीलिए पारद को धन्य कहा जाता है।

इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही पारद पर शोध होता रहा है, नागार्जुन के समय में आकर यह विद्या अपनी श्रेष्ठ स्थिति पर पहुँच गई, नागार्जुन ने पारद के सोलह संस्कार सिद्ध किए और पारद के द्वारा सोना और चांदी बनाने की प्रक्रिया स्पष्ट की, परंतु कालान्तर में यह विद्या पुनः धीरे-धीरे लोप हो गई और इस सम्बन्ध में न तो कोई प्रामाणिक साहित्य प्राप्त हो सका और न ऐसे रससिद्ध जानकार मिल सके, जो इस विद्या में पूर्णता प्राप्त हों।

परंतु यह विद्या सर्वथा लोप नहीं हुई, लोगों के मन में बराबर कश्मकश बनी रही कि पारद को बांधना और सिद्ध करना जरूरी है, इसकी चंचल स्थिति को बांधने पर ही आगे के अष्टादशन् संस्कार सम्पन्न हो सकते हैं।

अष्टादशन् संस्कार :

पारद के कुल सोलह संस्कार सम्पन्न किए जाते हैं, जिनमें पहले आठ संस्कार तो रोग निवारणार्थ औषध निर्माण, रसायन और धातुवाद के लिए आवश्यक हैं, और शेष आठ संस्कार खेचरी सिद्धि, धातु परिवर्तन, सिद्ध सूत और स्वर्ण बनाने में प्रयुक्त होते हैं।

आचार्यों ने जो अठारह संस्कार स्पष्ट किए हैं, वे इस प्रकार हैं—

१. स्वेदन २. मर्दन ३. मूर्च्छन ४. उत्थापन ५. पातन
६. रोधन ७. नियमन ८. दीपन ९. ग्रासमान १०. चारण
११. गर्भद्रुति १२. जारण १३. बाह्यद्रुति १४. रंजन
१५. सारण १६. क्रामण ।

कुछ आचार्यों ने इसके दो संस्कार और माने हैं, जिन्हें वेध और भक्षण कहा गया है।

भारतवर्ष के अधिकतर आयुर्वेद-आचार्यों और इस सम्बन्ध में जानकार व्यक्तियों का पुरा अठारह संस्कारों के नाम

ही मालूम नहीं हैं, संस्कार करना तो बहुत आगे की बात है, कोई इक्के-दुक्के आयुर्वेदाचार्य को ही पूरा पारद संस्कार आता होगा, जहां तक मेरी जानकारी है, अधिक से अधिक आठ संस्कार तक तो ये आचार्य सफल हुए हैं, परंतु आगे के संस्कारों का ज्ञान उन्हें नहीं है।

पुस्तिका कार्यालय में पिछले तीन वर्षों से इस पर बराबर शोध हो रहा है और इसका एक अलग से प्रखण्ड स्थापित किया गया, जिसमें इसके संस्कार सम्पन्न किए जाएं। यह प्रसन्नता की बात है, कि इस टीम ने पारद के पूरे अठारह संस्कार सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त की, और एक प्रकार से खोई हुए लुप्त विद्या को पुनर्जीवित कर पूर्णता प्राप्त की।

अब मैं पारद के संस्कार स्पष्ट कर रहा हूँ—

स्वेदन :

पारद संस्कार में पहला स्वेदन होता है, उससे पारद का मल-दोष दूर हो जाता है।

राई, सेंधा नमक, काली मिर्च, पीपर, चित्रक, अदरक और मूली प्रत्येक को, पारद का सोलहवां भाग लें, और इन सबको मिलाकर, बीच में पारद को कपड़े की पोटली में बांधकर रख दें और नीचे मंद-मंद अग्नि दें, तो स्वेदन संस्कार सम्पन्न होता है तथा पारद का मल दूर हो जाता है।

मर्दन :

मर्दन संस्कार में पारद को थैली में डाल कर या कपड़े में ढीला बांध कर बार-बार गर्म जल में डुबोने और मसलने से पारद में रहा हुआ मल निकल जाता है और वह बाह्य मल से मुक्त हो जाता है।

मूर्च्छन :

मूर्च्छन संस्कार में घीक्वार, त्रिफला और चित्रक को बराबर-बराबर लेकर मिला लें और उसमें पारद को खरल करें, तो एक घण्टे भर खरल करने से पारद मूर्च्छित हो जाता है, और वह सिद्ध पारद बन जाता है।

उत्थापन :

मूर्च्छित पारद को कांजी के साथ या नीम्बू के रस में खरल करने से उत्थापित हो जाता है, ऐसा पारद सर्वथा विष रहित और पवित्र बन जाता है।

पातन :

दो भाग पारद, एक भाग ताम्र तथा एक भाग नीला थोथा अथवा बच्छनाग मिलाकर अधोपातन क्रिया करने से पारद का पातन संस्कार हो जाता है, ऐसा संस्कार पूरा होने पर वह पारद विकारोत्पादक कंचुकों से सर्वथा मुक्त हो जाता है।

रोधन :

जब पातन संस्कार युक्त पारद बन जाए, तब उसे नपुंसकत्व दोष से मुक्त किया जाता है, इसी क्रिया को 'रोधन संस्कार' कहते हैं। इसके लिए गो-मूत्र, अजा-मूत्र, नर-मूत्र, मनुष्य का वीर्य, स्त्री का आर्तव तथा सैंधव को बराबर भाग में मिलाकर उसमें पारद को रख दिया जाता है, फिर इन सबको कांच की शीशी में भरकर तीन दिन तक भूमि में दबा देने से समस्त प्रकार के नपुंसकत्व दोष से मुक्त हो जाता है, इसी क्रिया को रोधन संस्कार कहा जाता है।

रोधन संस्कार का एक दूसरा प्रकार भी है, इसके अनुसार पचास तोले सैंधा नमक को तीन सेर जल में मिलाकर उसमें पारद रख दें तथा किसी कांच के बर्तन में भरकर, जमीन या खेत में उसे दबा कर रख दिया जाता है, सात दिन तक जमीन में दबा रहने से वह रोधन संस्कार युक्त हो जाता है।

इस संस्कार के पूर्ण होने पर पारद दिव्य चेतना युक्त बन जाता है, जो कि खेचरी साधना के लिए सहायक होता है।

नियमन :

ताम्बूल, लहसुन, सेंधा नमक, भांगरा, ककोरी और इमली इन सबका बराबर-बराबर भाग लेकर उसमें रोधन संस्कार किया हुआ पारद रख दिया जाता है, तथा तीन दिन

तक दौला यंत्र द्वारा स्वेदित किया जाता है, ऐसा करने से पारद नियमन संस्कार युक्त हो जाता है।

नियमन संस्कार होने पर पारद की चंचलता समाप्त हो जाती है, और ऐसा पारद कायाकल्प करने में पूर्ण समर्थ होता है।

यदि नियमन संस्कार करने पर भी पारद की चंचलता कुछ रह जाए, तो उसे पुनः नियमन करना चाहिए, जिससे कि वह पूर्णरूप से नियमन संस्कार युक्त हो जाए।

दीपन :

फिटकरी, कांची, सुहागा, काली मिर्च, सेंधा नमक, राई और सूहिजने के बीज बराबर-बराबर लेकर, उन्हें कूटकर एक सा बना लें और उसमें उस पारद को रख दें, फिर हल्की आंच से उसे पकावें, लगभग सात घंटे बाद पारद का दीपन संस्कार सम्पन्न हो जाता है, और ऐसा पारद ग्रास ग्रहण करने में समर्थ होता है।

उपरोक्त आठों संस्कार एक के बाद एक करने से पारद जब दीपन संस्कार युक्त हो जाता है, तो वह संसार की अद्वितीय धातु बन जाती है, इसके बाद इस पारद को नौसादर और यवक्षार के साथ आठ घण्टे तक खरल करने पर पारद निर्मल, निर्दोष और पूर्णरूप से बुभुक्षित हो जाता है, दूसरे शब्दों में यही पारद

बुभुक्षित पारद कहलाता है।

इस पारद को शिवलिंग का आकार देकर उसे नींबू का रस डालने से वह स्थायी आकार ग्रहण कर लेता है, फिर इस पर यदि स्वर्ण रखा जाए, तो यह पारद उस स्वर्ण को निगल लेता है।

इस प्रकार के पारद पर यदि स्वर्ण के साथ अन्य धातु मिली हुई होती है, तो यह बुभुक्षित पारद उसमें से अन्य धातु को छोड़कर केवल स्वर्ण को ही निगलता है कांच, जवाहरात अथवा अन्य धातु को ग्रहण नहीं करता।

कोई भी स्वर्ण या स्वर्ण से बनी वस्तु इस पर रखने से यह दस से पन्द्रह सेकेण्ड के भीतर-भीतर उस स्वर्ण को अपने-आप में पचा लेता है, परंतु इसके बावजूद भी इसका वजन नहीं बढ़ता, **इस प्रकार यह जब स्वर्ण से तृप्त हो जाता है, अर्थात् इसकी क्षुधा समाप्त हो जाती है, तब यह पारस पत्थर कहलाने लगता है, इसके बाद यदि इस बुभुक्षित पारद को किसी लोहे से स्पर्श कराया जाए, तो यह उस लोहे को दूसरे ही क्षण सोने में परिवर्तित कर देता है।**

नागार्जुन ने बताया है, कि ऐसा बुभुक्षित पारद सहस्रों बिजली की आभा के सदृश्य चमकता है, तथा इतना कठोर और मजबूत होता है, कि लोहे के घन या लोहे की आरी से भी यह

कटता नहीं है, इस प्रकार का पारस विश्व का अन्यतम पारद कहा जाता है।

इति दीपितो विशुद्धः प्रचलितविद्युल्लतासहस्राभः।

भवति यदा रसराजश्च दत्त्वा द्वितीयभिजम्।।

पीछे लेख में मैंने आवश्यक आठ संस्कार करने की विधि स्पष्ट की है।

पारद का दसवां और ग्यारहवां संस्कार महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ग्यारहवां संस्कार **गर्भद्रुति** संस्कार होता है, और इस प्रकार का संस्कार होने पर पारद से निरंतर पाउडर के समान श्वेत पिष्ट झड़ता रहता है, यही पिष्ट "सिद्धसूत" कहलाता है।

सिद्धसूत :

सिद्धसूत के बारे में रसायन शास्त्र के कई ग्रंथों में विवरण मिलता है, यह पाउडर की तरह होता है, और इसे शीशी में भरकर रख दिया जाता है, एक सेर ताम्बे पर यदि एक रत्ती गर्भद्रुति संस्कार युक्त पारद की यह पिष्टी डाल दी जाए, तो वह ताम्बा सोने में परिवर्तित हो जाता है, इस गर्भद्रुति संस्कार युक्त पारद की यह विशेषता होती है, कि इसमें से निरंतर यह पिष्टी झड़ती रहती है, जिसे एकत्र कर शीशी में रख दिया जाता है।

काशी के विश्व प्रसिद्ध भगवान विश्वनाथ मंदिर के

द्वार, जो सोने के बने हुए हैं, उनका निर्माण इसी प्रकार **गोविन्दाचार्य** ने **सिद्धसूत** के माध्यम से ही सम्पन्न किया था, और मात्र एक दिन में ही दोनों वजनी किवाड़ सोने में परिवर्तित कर दिए थे। अंग्रेजी काल में ये ऐतिहासिक किवाड़ वहां से हटा दिए गए, परंतु विश्वनाथ के प्राचीन विवरणों में इसका स्पष्टता के साथ उल्लेख मिलता है।

इस क्रिया में ताम्बे को गर्म किया जाता है, और जब वह पूरी तरह से लाल सुर्ख हो जाता है, तो उस पर एक तिनके से लेकर सिद्धसूत डालने से वह ताम्र उसी क्षण स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

आज के समय में भी ज्ञानदेव, चैतन्य बाबा आदि सिद्धसूत के श्रेष्ठतम जानकार हैं।

इसके आगे बारहवां तथा तेरहवां संस्कार करने के बाद **रंजन संस्कार** किया जाता है, ऐसा संस्कार करने पर पारद में एक विशेष चेतना आ जाती है, और यह विशेषता चतुर्वर्गात्मक पदार्थ को त्रिवर्गात्मक पदार्थ में परिवर्तित कर देती है।

देवता, गंधर्व, किन्नर, यक्ष आदि त्रिवर्गात्मक हैं, इनमें भूमि तत्त्व का सर्वथा अभाव होता है, फलस्वरूप ये इच्छा-शक्ति के द्वारा सशरीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर तत्क्षण आ-जा सकते हैं, त्रिवर्गात्मक होने

के कारण ही इन पर गुरुत्वाकर्षण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मनुष्य पंचभूतात्मक और चतुर्वर्गात्मक है, मनुष्य के शरीर में भूमि तत्त्व की प्रधानता होने के कारण वह जमीन पर स्थिर है, और गुरुत्वाकर्षण के कारण वह वायु वेग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं जा सकता और न अदृश्य हो सकता है।

चौदह संस्कार होने पर पारद में यह विशेषता आ जाती है, कि वह किसी भी मनुष्य या पदार्थ को त्रिवर्गात्मक बना देता है, फलस्वरूप उसका भूमि तत्त्व और गुरुत्वाकर्षण के साथ-साथ दृश्य तत्त्व लोप हो जाता है।

इस प्रकार की गुटिका हाथ में या मुंह में रखते ही व्यक्ति अदृश्य हो जाता है, वह तो सभी लोगों को देख सकता है, परंतु उसे कोई नहीं देख पाता, साथ ही साथ वह इस गुटिका के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर एक ही क्षण में जा सकता है।

चौदहवां रंजन संस्कार सम्पन्न पारद को **“खेचरी पारद”** भी कहा जाता है। इस विद्या के जानकार भारतवर्ष में हैं, वाम मार्ग के कई साधकों को यह क्रिया सम्पन्न करते देखा है।

पारद के आगे के संस्कार अन्यतम हैं, सारण, क्रामण, वेध और भक्षण संस्कार ज्यादा कठिन नहीं हैं, परंतु ऐसा करने

पर वह पारद संसार का अद्वितीय पारद बन जाता है, जो कि लोहे को सोने में परिवर्तित कर लेता है, उसके द्वारा झड़ने वाले सिद्धसूत से ताम्बे को सोने में रूपान्तरित किया जा सकता है, खेचरी सिद्धि प्राप्त हो जाने की वजह से वह स्वयं अदृश्य रहकर कार्य सम्पन्न कर सकता है तथा वायुवेग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है, साथ ही साथ अठारह संस्कार सम्पन्न पारद व्यक्ति के लिए देवदूत की तरह होता है, जो कि उसे असीम सिद्धियों का स्वामी बना देता है।

★★★

पारद शिवलिंग

पारद शिवलिंग संसार का एक अद्वितीय और देवताओं की तरफ से मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है। संसार में बहुत कुछ प्राप्य है, और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, परंतु मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त रससिद्ध पारे से निर्मित “**पारद शिवलिंग**” प्राप्त होना सौभाग्य का ही सूचक है, इसके दर्शन से पूर्वजन्म के पाप क्षय हो जाते हैं तथा सौभाग्य का उदय होने लगता है।

सामान्यतः पारद का शोधन अत्यन्त कठिन कार्य है, और इसे ठोस बनाने के लिए मूर्च्छित, खेचरित, कीलित, शम्भू विजीत और शोधित जैसी कठिन प्रक्रियाओं में से गुजारना पड़ता है, तब जाकर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है, और उससे शिवलिंग निर्माण सम्पन्न होता है।

शिवलिंग निर्माण के बाद ही कई मांत्रिक क्रियाओं

से गुजरने पर ही पारद शिवलिंग रससिद्ध एवं चैतन्य हो पाता है, जिससे वह पूर्ण सक्षम एवं प्रभावयुक्त बनता है, इसीलिए तो कहा गया है, कि जिसके घर में पारद शिवलिंग है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिए ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है।

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं, जो व्यक्ति सामान्य घर में जन्म लेकर विपरीत परिस्थितियों में बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपने घर में “पारद शिवलिंग” की स्थापना करनी चाहिए। संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। पारद शिवलिंग के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वहीं उसे जीवन में मोक्ष-प्राप्ति भी निश्चित रूप से सुलभ रहती है।

वैज्ञानिक दृष्टि से पारा या पारद द्रव्य पदार्थ है, इसे अंग्रेजी में ‘मरक्युरी’ कहते हैं। इसमें अन्य किसी भी प्रकार के पदार्थ का सम्मिश्रण संभव नहीं, साथ ही इस पारे को ठोस आकार में बनाना अत्यन्त कष्ट साध्य है, और जब तक पारद

ठोस आकार ग्रहण नहीं कर लेता, तब तक शिवलिंग का निर्माण संभव नहीं होता, परन्तु फिर भी रसायन के माध्यम से पारे को ठोस बनाया जा सकता है, तब उसे शिवलिंग का आकार दे दिया जाता है और बाद में वह इतना ठोस हो जाता है कि उसके सामने शीशे की बनी गोली भी लचीली प्रतीत होती है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी ने कहा है कि जो साधक “पारद शिवलिंग” को अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उसके दर्शन ही करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-धान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है, संसार में जितने भी शिवलिंग हैं, उन सबकी पूजा का फल केवल मात्र पारद शिवलिंग के पूजन से ही प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार रावण रससिद्ध योगी था, वह “पारद शिवलिंग” की पूजा कर, शिव को पूर्ण प्रसन्न कर अपनी नगरी को स्वर्णमयी बनाने में सफल हो सका था। बाणासुर ने पारद शिवलिंग की पूजा कर उनसे मनोवांछित वर प्राप्त किया था, यह विवरण “रुद्र-संहिता” में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

अन्य शास्त्रों में भी इस बारे में जो विवरण प्राप्त होते हैं, उनसे यह स्पष्ट है कि वास्तव में ही पारद शिवलिंग दुर्लभ है, और बिरले लोगों के घर में ही इस प्रकार के शिवलिंग स्थापित होते हैं।

मैंने पिछले पांच वर्षों में इस प्रकार के रससिद्ध पारे को ठोस बनाकर कई शिवलिंग बनाये हैं, और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये हैं, वे सभी आज अच्छे स्तर पर हैं, और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर हैं, साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है, और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त हुई है, वह उनके स्वयं के लिए भी चकित कर देने वाली है।

नीचे मैं कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के विवरण दे रहा हूँ, जिससे स्पष्ट होता है, कि पारद शिवलिंग कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है—

१. योगशिखोपनिषद् :

रसलिंगं महालिंगं शिवशक्तिनिकेतनम् ।

लिंगं शिवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम् ॥

अर्थात् रसलिंग ही महालिंग है, और इसे ही शिव-शक्ति का घर या शिवालय कह सकते हैं, इसके प्राप्त होने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

२. सर्वदर्शनसंग्रह :

अभ्रकं तव बीजं तु मम बीजं तु पारदः ।

बद्धो पारद लिंगोऽयं मृत्यु दारिद्र्य नाशनम् ॥

अर्थात् भगवान् शंकर स्वयं भगवती से कहते हैं कि पारद को ठोस कर, लिंगाकार बनाकर जो पूजन करता है, उसे जीवन में मृत्यु-भय व्याप्त नहीं होता, और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नहीं आ पाती।

३. रसरत्नसमुच्चय :

विधाय रसलिंगं यो भक्तियुक्तः समर्चयेत् ।

जगत्त्रितयलिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात् ॥

अर्थात् जो भक्ति के साथ पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंग की पूजा का फल प्राप्त होता है तथा उसके समस्त महापाप नाश हो जाते हैं।

४. रसार्णव तंत्र :

धर्मार्थकाममोक्षाख्या पुरुषार्थचतुर्विधा ।

सिद्धयन्ति नात्र संदेहो रसराजप्रसादतः ॥

अर्थात् जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की एक बार भी पूजा कर लेता है, उसे इस जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चारों प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है।

स्वयम्भूलिंग सहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात् ।

तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत् ॥

अर्थात् हजारों प्रसिद्ध लिंगों की पूजा से जो फल मिलता है, उससे करोड़ गुना फल पारद निर्मित शिवलिंग की पूजा से सहज ही प्राप्त हो जाता है।

५. शिव निर्णय रत्नाकर :

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः,

मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः।

रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति॥

अर्थात् मिट्टी या पत्थर से करोड़ गुना अधिक फल स्वर्ण निर्मित शिवलिंग के पूजन से मिलता है। स्वर्ण से करोड़ गुना अधिक मणि, और मणि से करोड़ गुना अधिक फल, बाणलिंग नमदश्वर के पूजन से प्राप्त होता है, नमदश्वर बाणलिंग से भी करोड़ गुना अधिक फल, पारद शिवलिंग के पूजन या दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। पारद निर्मित शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो संसार में हुआ है, और न हो सकता है।

६. रस मार्तण्ड :

लिंग कोटि सहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्।

तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत्॥

ब्रह्महत्यासहस्राणि गोहत्याशतानि च,
तत्क्षणाद्विलयं यान्ति रसलिंगस्य दर्शनात्।
स्पर्शनात्प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्॥

अर्थात् हजारों-करोड़ों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है। हजारों ब्रह्म हत्याओं और सैकड़ों गौ हत्याओं का किया हुआ पाप भी पारद शिवलिंग के दर्शन करते ही दूर हो जाता है। इसे स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है, यह स्वयं भगवान् शिव का कथन है।

७. ब्रह्म पुराण :

धन्यास्ते पुरुषाः लोके येऽर्चयन्ति रसेश्वरम्।

सर्वपापहरं देवं सर्वकामफलप्रदम्॥

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः स्त्रियः शूद्रान्त्यजादयः।

सम्पूज्य तं सुखं प्राप्नुवन्ति परां गतिम्॥

अर्थात् संसार में वे मनुष्य धन्य हैं, जो समस्त मनोवांछित फलों को देने वाले पारद शिवलिंग का पूजन करते हैं, इसका पूजन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री या अन्त्यज कोई भी करके पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता हुआ परम गति को प्राप्त कर सकता है।

८. ब्रह्मवैवर्त पुराण :

पच्यते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरो,
कृत्वालिंगं सकृत् पूज्यं वसेत्कल्पशतं दिवि।
प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्रबान्धववौस्तथा;
ज्ञानवान् मुक्तिवान् साधुः रस लिंगार्चनाद् भवेत् ॥

अर्थात् जो एक बार भी पारद शिवलिंग का विधि-विधान से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं, तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है, उसके जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र, विद्या, ज्ञान आदि में कोई कमी नहीं रहती और अन्त में वह निश्चय ही मुक्ति प्राप्त करता है।

९. शिव पुराण :

गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भ्रूणहापि वा,
शरणागतघाती च मित्र विश्रम्भघातकः।
दुष्टपापसमाचारो मातृपितृहापि वा;
अर्चनात् रसलिंगेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते ॥

अर्थात् गौ-हत्या, कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला तथा माता-पिता का घातक भी यदि पारद शिवलिंग की पूजा करता है, तो वह तुरन्त सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

१०. वायवीय संहिता :

आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वाञ्छितम्।
रसलिंगस्यार्चनादिष्टं सर्वं लभते नरः ॥

अर्थात् आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य और जो भी मनोवाञ्छित वस्तुएं हैं, उन सबको पारद शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा भी सैकड़ों ग्रंथों में पारद शिवलिंग की विशेषता बताई गयी है। भगवान् शंकर ने स्वयं कहा है कि मुझे वह व्यक्ति ज्यादा प्रिय है, जो द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने की अपेक्षा पारद शिवलिंग के दर्शन कर लेता है।

पारद शिवलिंग आर्द्रता रहित, निश्चल, श्वेत लिंगाकार होना चाहिए और ऐसा शिवलिंग शास्त्र सम्मत होना आवश्यक है, क्योंकि शिवलिंग और उसके आधार का एक निश्चित परिमाण है, यह कार्य केवल "विजय काल" में ही सम्पन्न करना चाहिए, और इस प्रकार श्रेष्ठ समय में पारे को रससिद्ध करके उसे ठोस बनाने की प्रक्रिया करनी चाहिए, साथ ही साथ शिवलिंग का आकार भी विजय काल में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में पारद शिवलिंग को मुद्रा-बन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मंत्रसिद्ध, रससिद्ध करना चाहिए। ऐसा

होने के बाद संजीवनी मुद्रा मंत्र से उसे प्रभावपूर्ण बनाना चाहिए, ऐसा होने पर ही पारद शिवलिंग दुर्लभ शिवलिंग बनता है, और भारत में बहुत ही कम सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ऐसा शिवलिंग है।

जब भाग्य होता है, तभी इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है, जब सौभाग्य का उदय होता है, तभी व्यक्ति इस प्रकार का पारद शिवलिंग प्राप्त करता है, वस्तुतः वे व्यक्ति और उनकी पीढ़ियां धन्य हैं, जिनके घर में देव-दुर्लभ पारद शिवलिंग स्थापित है।

शास्त्रों के अनुसार पारद शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। मेरे जीवन में ऐसे हजारों अनुभव हैं, यदि उन्हें लेखनीबद्ध किया जाए, तो पूरा एक ग्रंथ बन सकता है कि **पारद शिवलिंग के पूजन से उन लोगों ने उन असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर दिखाया है, जो उनके लिए सम्भव नहीं थे। ऐसे व्यक्ति दरिद्री के घर में जन्म लेकर भी प्रसिद्ध उद्योगपति और लक्ष्मीपति होते देखे गये हैं, संसार में और सभी मंत्र-तंत्र झूठे हो सकते हैं, पर ऐसा एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं है कि किसी के घर में पारद शिवलिंग स्थापित हो और उसके जीवन में पूर्णता प्राप्त न हुई हो।**

जिसके घर में पारद शिवलिंग होता है, वह घर तीर्थ के समान माना जाता है, और उसमें रहने वालों के समस्त कार्य सुविधा पूर्वक सम्पन्न होते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन

में पूर्ण भोग भोगते देखे गये हैं, ऐसे घरों से नित्य मंगलदायक समाचार प्राप्त होते रहते हैं, जीवन में अभाव या न्यूनता नहीं रहती, अपितु उनकी सारी इच्छाएं स्वतः ही पूरी होती रहती हैं।

वास्तव में ही जिसके तप, ज्ञान द्वारा पाप क्षीण होते हैं, उनको ही पारद शिवलिंग की पूजा का सौभाग्य प्राप्त होता है। हो सकता है, आज के इस अनास्थावान युग में यह बात विश्वसनीय प्रतीत नहीं हो रही हो, पर यह उनका दुर्भाग्य ही है कि वे सही रूप में सोच ही नहीं पाते।

स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह घोषणा करने में सक्षम हूँ कि पारद शिवलिंग अपने-आप में दुर्लभ शिवलिंग है, बिना प्रसिद्ध योगी या गुरु के इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त नहीं हो पाता, और भाग्य से ही रससिद्ध पारद शिवलिंग घर में स्थापित हो पाता है।

इस जीवन में धन तो आता-जाता रहता है, परन्तु जीवन का सौभाग्य उदय होने पर ही व्यक्ति सही निर्णय कर पाता है और प्रयत्न करके अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर पाता है, जिससे वह तो पूर्ण भोग और मोक्ष प्राप्त करता ही है, उसकी आगे की पीढ़ियां भी उसके प्रति कृतज्ञ रहती हैं, जिसकी वजह से उनके घर में पारद शिवलिंग स्थापित हो सका।

आज के इस युग में भी पारद शिवलिंग एक चमत्कार है, एक श्रेष्ठ साधना है, एक आश्चर्यजनक, सफलतादायक उपाय है।

वस्तुतः पारद हमारे जीवन की श्रेष्ठतम धातु है और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि नागार्जुन के बाद अब पुनः पारे के महत्त्व को और उसकी क्रियाओं को लोगों ने जाना है तथा साधकों ने पुनः परिश्रम, प्रयत्न कर अठारहों संस्कार सम्पन्न करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। इस लुप्त विद्या का पुनर्जीवन अपने-आप में इस शताब्दी की अन्यतम घटना है, और अब मुझे विश्वास है कि हमारे आगे की पीढ़ी इस विद्या को विस्मृत नहीं होने देगी।

पारद शिवलिंग इन सारी सिद्धियों का केन्द्र है, शिव भक्त स्वर्णमयी लंका के अधिपति रावण का कहना है कि यदि पारद शिवलिंग का नित्य पूजन या मात्र दर्शन ही किया जाए, तब भी उस साधक को समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि आज के युग में वही परिवार धन्य है, जिसके घर में पारद शिवलिंग हो, वही मनुष्य श्रेष्ठ है, जो पारद शिवलिंग के दर्शन कर पाता है, वही व्यक्ति पूर्णत्व प्राप्त कर सकता है, जो पारद शिवलिंग की नित्य पूजा करता है। यह हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि हमें जीवन में इस प्रकार का पारद शिवलिंग प्राप्य है।

★ ★ ★



पा रसेश्वरी सिद्धि ग्रंथ में बताया गया है कि साधक अपने गुरु के पास जाकर उससे याचना करे, कि वह मंत्र दीक्षा प्राप्त करना चाहता है, तब गुरु उसे 'रसेश्वरी दीक्षा' दे।

सबसे पहले गुरु, साधक को अपने सामने बिठावे और श्रेष्ठ मुहूर्त देख कर उसका गंगाजल से मार्जन करे, फिर उसके ललाट पर रस सिंदूर का तिलक करे, तथा भगवान शिव के १०८ बीजों से साधक का अंगन्यास करे।

फिर साधक हाथ में जल लेकर विनियोग करे—

विनियोग

ॐ अस्य श्री रसेश्वरी मंत्रस्य महादेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः
श्री रसेश्वरी पार्वती देवता रसकर्म सिद्धये जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक अपने सामने स्थापित भगवा-
पारदेश्वर शिवलिंग का ध्यान करे।

ध्यान

अष्टादशभुजं शंभुं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
प्रेतारूढं नीलकण्ठं ध्यायेद्वामे च पार्वतीम् ।।
चतुर्भुजामेकवक्त्रा मक्षमालांकुशे तथा ।
वामे पाशांभवे चैव दधतीं तप्तहेमभाम् ।।
पीतवस्त्रां महादेवीं नानाभूषणभूषिताम् ।
रसेश्वरीं शंभुयुतां रससिद्धिं प्रदां भजे ।।
वाणीस्मरः पुनर्वाणी लज्जावाणीरितोमतः ।
पंचाक्षरो रसेश्वर्याः सर्वसिद्धिं विनायक ।।
रसकर्मणि सर्वत्र शोधने साधने मृतौ ।
अष्टोत्तरसहस्रं वै जपन्कर्म समारभेत् ।।

अर्थात् अठारह भुजाओं वाले, श्वेत वर्ण, पांच मुख,
तीन नेत्र, प्रेतों की सवारी करने वाले नीलकण्ठ महादेव मुझे
पूर्णता प्रदान करें, भगवान शिव के बाईं ओर स्थापित चार भुजा
और एक मुख को धारण करने वाली, जिसके दाहिने हाथ में
रुद्राक्ष माला और अंकुश तथा बायें हाथ में पाश और अभय
है, जो गौर वर्ण और स्वर्ण के समान वैदीयमान देह युक्त है।

जो पीताम्बर वस्त्र धारण किए हुए है, जो अनेक आभूषणों से
सजी हुई है, ऐसी रसेश्वरी को मैं भक्ति-भाव से प्रणाम करता हूँ।

ऐसा ध्यान करने के बाद गुरु साधक के शरीर में
चौंसठ महादेव को स्थापित करे, जिससे साधक का शरीर वज्र
की तरह मजबूत और स्वर्ण के समान दिव्य बन जाए।

फिर गुरु अपने शिष्य का “रसांकुश विद्या” से प्रणव
करे, “कामबीज” से यौवन शक्ति प्रदान करे, “शक्ति बीज”
से पौरुष प्रदान करे, “रक्षा बीज” से पूर्ण सुरक्षा दे, “अग्नि
बीज” से उसके सारे शरीर को स्वर्ण के समान बनावे, “रस
बीज” से उसे सिद्धि प्रदान करे और “रसेश्वरी बीज” से उसे
अतुलनीय ऐश्वर्यवान बनावे।

इसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न अधोर मंत्र
की पांच माला मंत्र-जप वहीं पर बैठे-बैठे करे।

अधोर मंत्र

ॐ हां हीं हूं अष्टोत्तर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रकट
प्रकट कुरु कुरु शमय शमय जात जात दह दह पानय
पानय ॐ हीं हैं हीं हूं अधोराय फट् ।।

इसके बाद गुरु ऐसे साधक को विशेष पूजन क्रम
सम्पन्न करावे और उसके शरीर में कामदेव को निम्न विशेष बीज
मंत्र से स्थापित करे—

काम बीज मंत्र -

ॐ हां हीं हूं अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरतरेभ्यः
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः ।।

इससे कमजोर से कमजोर साधक भी पूर्ण पौरुषवान, यौवनवान और क्षमतावान पुरुष बन जाता है, और उसके सारे शरीर की कमजोरी दूर हो जाती है, इसके साथ ही साथ गुरु को चाहिए कि वह सहस्रधारा प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे शिष्य का शरीर पूर्ण सम्मोहक और आकर्षक बन जाय, जो कि हजारों-हजारों स्त्रियों को सम्मोहित करने में समर्थ हो सके।

दीक्षा का दूसरा क्रम

जैसा कि मैंने ऊपर बताया था कि इस रसेश्वरी दीक्षा के तीन क्रमों में पहला क्रम समाप्त होने के बाद गुरु उसका दूसरा क्रम प्रारम्भ करे।

साधक अपने सामने पारदेश्वर शिवलिंग को चांदी के पात्र में स्थापित करे और गुरु या दीक्षा देने वाला “सौन्दर्य क्रम” से शिष्य का अभिषेक करे, “यौवन क्रम” से रेचन करे, “काम बीज” से सम्पुटित करे, “पारद बीज” से पूर्णता दे और “शिव बीज” से उसे पूर्ण जीवन प्रदान करे।

इस प्रकार यह रसेश्वरी साधना का दूसरा क्रम अत्यन्त

महत्त्वपूर्ण है और इससे साधक तेजी से साधना क्रम में सफलता की ओर अग्रसर होता है, और आगे चलकर वह पारद के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

दीक्षा का तीसरा क्रम

दीक्षा के तीसरे क्रम में साधक को शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुंह करके बिठावे और उसके शरीर में भगवान सूर्य का आवाहन करे, फिर उसके शरीर में लक्ष्मी के १०८ रूपों को स्थापित करे, जिससे कि उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव न रहे।

फिर सामने पारद से निर्मित भगवती लक्ष्मी को अग्नि कोण में स्थापित करे, और साधक का गौ-दुग्ध से मार्जन करे, तथा सामने अग्नि स्थापित कर निम्न मंत्र से १०८ घी की आहुतियां दे—

मंत्र

ॐ हं हौं नमः ।

आहुतियां देने के बाद साधक अपने गुरु की पूजा करे, और अपने गुरु में ही भगवान शिव को स्थापित समझकर उनकी पूर्ण पूजा करते हुए दक्षिणा समर्पित करे और फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

शिवाय शान्तरूपाय अनाथाय नमो नमः ।
 अमूर्ताय नमस्तेऽस्तु व्योमरूपाय वै नमः ॥
 तेजसे च नमस्तेऽस्तु अनंताय नमोऽस्तुते ।
 तेजोरूप नमस्तेऽस्तु सर्वगाय नमो नमः ॥
 ॐ अमृताय स्वाहा, ॐ अनाथाय स्वाहा ।
 ॐ शिवाय स्वाहा, ॐ व्योमव्यापिने स्वाहा ॥
 ॐ रुद्रतेजसे स्वाहा, ॐ जीवात्मने स्वाहा ।
 ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा ॥

इस प्रकार गुरु की पूर्ण पूजा करके उन्हें पाद्य समर्पित करे, धूप, दीप, नैवेद्य और दक्षिणा समर्पित करे और प्रार्थना करे कि साधक अपने जीवन में पूर्ण सफल हो ।

तब गुरु अपने शिष्य को “पारद सिद्धि” का आशीर्वाद दे, और उसे इन्द्रियों को जीतने वाला बना कर पूर्णता प्रदान करे ।

रसेश्वरी महत् दीक्षा पूर्ण भाग्यं यदिर्भवेत् ।
 स सिद्ध देवतुल्यो वा जलौ गगनं विवर्णयेत् ॥

अर्थात् जिस व्यक्ति को अपने जीवन में उत्तमकोटि के गुरु मिल जाते हैं, जिन्हें रसेश्वरी दीक्षा देने का ज्ञान होता है, जो स्वयं समर्थ और सिद्ध योगी होते हैं, ऐसे गुरु से यदि

जीवन में भेंट हो जाए, तो उनके पांव कस कर पकड़ लेने चाहिए और प्रयत्न करके उनसे रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

क्योंकि रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक सामान्य व्यक्ति नहीं रह जाता, अपितु वह “दिह सिद्ध योगी” बन जाता है और देवता भी उससे ईर्ष्या करते हैं, वह जल पर सामान्य गति से चलने में समर्थ होता है, और आकाश में भी हवा की तरह विचरण करने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ ही क्षणों में जाने में समर्थ सिद्ध योगी बन जाता है ।

गुरु सेवां बिना कर्म यः कूर्यान्मूढचेतनः ।

स याति निष्फलत्वं हि स्वप्नलब्धं यथा धनं ॥

अर्थात् जो मूर्ख मनुष्य बिना गुरु की सेवा किए पारद कर्म को करता है या पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसका सारा धन व्यर्थ और साधना निष्फल हो जाती है ।

गुरौ तुष्टे शिवस्तुष्टः शिवे तुष्टे रसस्तथा ।

रसे तुष्टे क्रियाः सर्वाः सिद्ध्यन्ति नात्र संशयः ॥

अर्थात् गुरु के प्रसन्न होने पर भगवान् शिव महादेव भी पूर्ण प्रसन्न होते हैं, और भगवान् शिव के प्रसन्न होने से पारद सिद्धि प्राप्त होती है, जिससे वह स्वर्ण निर्माण करने में सक्षम हो पाता है ।

इस प्रकार यह रसेश्वरी दीक्षा संसार की श्रेष्ठ और

अद्वितीय दीक्षा है, अत्यन्त सौभाग्यशाली व्यक्ति ही इस प्रकार की दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि रसेश्वरी दीक्षा देने वाले गुरु वर्तमान संसार में बहुत कम रह गए हैं, और ऐसे शिष्य भी गिने-चुने ही हैं, जो रसेश्वरी दीक्षा लेने की भावना रखते हों, जब व्यक्ति के जीवन का सौभाग्य उदय होता है, तभी उन्हें अपने जीवन में रसेश्वरी दीक्षा देने वाले गुरु प्राप्त होते हैं, तभी ऐसा संयोग उपस्थित होता है, और तभी ऐसे गुरु अपने शिष्य को रसेश्वरी दीक्षा देकर उसे धन्य करते हैं।

पारदेश्वर

मैंने पारद के आठों संस्कार स्पष्ट किए हैं, और यदि व्यक्ति चाहे तो इन तरीकों को अपनाकर पूर्णता के साथ पारद संस्कार सम्पन्न कर सकता है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए, कि बाजार में जो पारद मिलता है, वह अशुद्ध, असंस्कारित एवं मल युक्त होता है, उसमें कई प्रकार के दोष होते हैं, अतः ऐसे पारद से स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो सकती।

साधक को चाहिए, कि वह कहीं से भी पूर्ण आठों संस्कार सम्पन्न पारद को ही प्रयोग में लावे, पारद को संस्कारित करने के लिए यह जरूरी है, कि पहले उसका पहला संस्कार सम्पन्न करे, पहला संस्कार सम्पन्न करने के बाद जो पारद प्राप्त होता है, उसी से उसका दूसरा संस्कार सम्पन्न करे, और इसी प्रकार क्रमशः संस्कारित पारद को उपयोग में लेते हुए ही उसके

आठवें संस्कार को सम्पन्न करे।

जब आठों संस्कारों से सम्पन्न पारद प्राप्त हो जाता है, तब वह पारद पूर्णरूप से शुद्ध, चैतन्य और बुभुक्षित होता है, ऐसे पारद में चपलता और चंचलता नहीं रहती, और यदि ऐसे पारद का शिवलिंग बनाया जाए, तो वह अपने-आप में अद्भुत, तेजस्वी तथा वरदायक शिवलिंग बनता है, सही अर्थों में ऐसे शिवलिंग को ही “पारदेश्वर शिवलिंग” कहा गया है।

जिसके घर में ऐसा शिवलिंग होता है, उस व्यक्ति की कोई तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि उसके घर में केवल पारदेश्वर शिवलिंग ही स्थापित नहीं होता, अपितु भगवती लक्ष्मी, अन्नपूर्णा और कुबेर भी साथ ही साथ घर में स्थायी रूप से स्थापित हो जाते हैं, फिर उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

ऐसा पारदेश्वर शिवलिंग एक तोले का, पांच तोले का, ग्यारह तोले का, इक्कीस या इक्यावन तोले का अथवा एक सौ आठ तोले का निर्मित किया जाता है, जिसके नीचे पूर्ण आधार और योनि हो तथा उस पर शिवलिंग पूर्णता के साथ स्थापित हो, ऐसे शिवलिंग को जो साधक अपने जीवन में, अपने गुरु से प्राप्त करता है, वह सही अर्थों में सौभाग्यशाली व्यक्ति होता है।

परन्तु आजकल बाजार में नकली तरीके से भी पारद

का मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न कर, उससे शिवलिंग का निर्माण कर लिया जाता है, क्योंकि बाजार में जो पारा मिलता है, वह दोष युक्त होता है, फिर उसमें नीला थोथा या नमक मिलाने से वह विशेष दोष युक्त बन जाता है, परन्तु ऐसा पारद मूर्च्छित भी हो जाता है, और उससे शिवलिंग का निर्माण हो सकता है।

परन्तु ऐसे शिवलिंग को सही अर्थों में पारदेश्वर नहीं कहा जा सकता, ऐसा शिवलिंग प्रामाणिक, शुद्ध और चैतन्य भी नहीं होता, ऐसा पारदेश्वर शिवलिंग वरदायक भी नहीं होता, इसलिए जो सौभाग्यशाली व्यक्ति होता है, जो अपने घर में इस प्रकार के पारदेश्वर को स्थापित करना चाहता है, उसे चाहिए कि या तो वह स्वयं इन आठों संस्कारों को सम्पन्न कर पारदेश्वर का निर्माण करे या फिर गुरु की सेवा कर उनके द्वारा २१ तोले का प्रामाणिक शिवलिंग निर्माण करावे और उसे अपने घर में स्थापित करे, साथ ही ऐसे पारद से ही भगवती लक्ष्मी का निर्माण भी करे, और उसे अपने घर के पूजा स्थान में, अग्नि कोण में स्थापित करे।

वस्तुतः ऐसे सौभाग्यशाली व्यक्ति की तुलना ही नहीं हो सकती, देवता लोग भी ऐसे व्यक्ति के भाग्य से ईर्ष्या करते हैं, जिसके घर में ऐसा पारदेश्वर स्थापित हो, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और लक्ष्मी स्वयं उसके घर में हाथ बांधे खड़ी रहती है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे

विजय प्राप्त होती रहती है, और वह मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर पूर्ण ऐश्वर्यवान बन जाता है।

ऐसे घर में लक्ष्मी पूर्णरूप से चैतन्य होकर स्थापित हो जाती है, और धन, धान्य, भवन, कीर्ति, यश, दीर्घायु, पुत्र, पौत्र, वाहन और सम्पूर्ण सिद्धियों के साथ लक्ष्मी का निवास उसके घर में होता है।

स्वयं भगवान शिव ने कहा है—

पारदेश्वर स्थापित्यं लक्ष्मीं सिद्धिं तद् गृहे।

धनं धान्यं धरा पौत्रं पूर्ण सौभाग्य वै नरः॥

जिसके घर में मैं आठों संस्कार युक्त पारद से निर्मित पारदेश्वर बन कर स्थापित होता हूं, उसके घर में मेरे साथ-साथ कुबेर, लक्ष्मी और सौभाग्य निश्चय ही स्थापित होते हैं, उनके जीवन में धन की कमी नहीं रहती।

विश्वामित्र ने एक स्थान पर इस प्रकार के पारदेश्वर की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है, कि आठों संस्कार सम्पन्न पारदेश्वर को प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है, जिसके घर में ऐसा पारदेश्वर स्थापित है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव हो भी कैसे सकता है?

यः नरः प्राप्यते सिद्धिं पारदेश्वर संस्करः।

अभावः दुख दारिद्र्यं किं प्राप्यते स्वयं तदा॥

‘वशिष्ठ’ ने अपने ग्रंथ में कहा है कि—

पारदेश्वरं स्थापित्यं सर्व पाप विमुच्यते।

सौभाग्य सिद्धि प्राप्यन्ते पूर्ण लक्ष्मी लभेत् नरः॥

चाहे व्यक्ति ने कितने भी पाप किए हों, चाहे उसके जीवन में पूर्व जीवनकृत दोष हों, चाहे विधाता ने उसके जीवन में सौभाग्य लिखा ही नहीं हो, फिर भी यदि वह अपने घर में पारदेश्वर को स्थापित करता है या उसका दर्शन करता है, तो उसके समस्त दोष मिट जाते हैं और वह पूर्ण सौभाग्यशाली बन जाता है।

पारदेश्वर का दर्शन ही जीवन का सौभाग्य है, इसके दर्शन से जीवन के पाप-दोष और दुर्भाग्य समाप्त होते हैं, और वह जीवन में जो भी कामना करता है, उसकी प्राप्ति सहज संभव है।

पारदेश्वर पुण्यं वै सर्व पापं विमुच्यते।

दुर्भाग्यं दोष नश्यन्ते इच्छा पूर्ति प्रलभ्यते॥

एक अन्य स्थान पर भगवान पारदेश्वर के बारे में ‘महर्षि याज्ञवल्क्य’ ने कहा है—

किं दारिद्र्यं दुखं पापं किं दोषं रोग शोकं च।

पारदेश्वर यत् साक्षात् पूर्ण सौभाग्य प्राप्यते॥

मुझे समझ में नहीं आता, कि मनुष्य के जीवन में दरिद्रता क्यों है? वह दुःखी, संतप्त और पीड़ित क्यों है? उसके जीवन में अभाव और बाधाएं क्यों हैं? जबकि उसके पास आठों संस्कार युक्त पारद से निर्मित भगवान पारदेश्वर की प्राप्ति सहज सम्भव है।

‘महर्षि कणाद’ ने पारदेश्वर का वर्णन कई स्थानों पर किया है—

पारदेश्वर देवं वै पूर्ण सिद्धिं लभेत् सदा।

ज्ञान विज्ञान सौभाग्यं प्राप्यते भव दर्शनात्॥

मैंने जीवन में जो भी सिद्धियां प्राप्त कीं, अणु के क्षेत्र में जो भी विज्ञान हस्तगत किया, मैं जो भी हूँ और जो कुछ पूर्णता प्राप्त की है, उसका एकमात्र श्रेय पारदेश्वर का स्थापन और उसका नित्य पूजन है।

‘लक्ष्मी उपनिषद्’ में स्वयं लक्ष्मी ने कहा है—

यत्र पारदेश्वरं देवं तत्राऽहं वर सिद्धि युत्।

तत्र नारायणो साक्षात् तत्र त्रैलोक्य सम्पदः॥

जहां पर भगवान पारदेश्वर स्थापित हैं, वहां मैं अपने समस्त वरदायक तत्त्वों के साथ स्थापित होने के लिए बाध्य हूँ, जहां पर भगवान पारदेश्वर हैं, वहां साक्षात् नारायण उपस्थित हैं, और जहां नारायण हैं, वहां मेरी उपस्थिति अनिवार्य है।

एक अन्य स्थान पर ‘लक्ष्मी’ ने कहा है—

पारदेश्वर सिद्धिं वै साफल्यं लक्ष्मी च श्रियं।

कनक वर्षा धनं पुत्रं पौत्र सौभाग्य वै नरः॥

कलियुग में जीवन की पूर्णता, सम्पन्नता, श्रेष्ठता और सफलता का एकमात्र उपाय भगवान पारदेश्वर का दर्शन है, अतुलनीय धन और सौभाग्य प्राप्त करने का एकमात्र साधन भगवान पारदेश्वर का पूजन है, और घर में धन-धान्य, सुख-सौभाग्य, पुत्र-पौत्र और कनक वर्षा के लिए एकमात्र उपाय इस प्रकार के पारदेश्वर को प्राप्त करना है, और घर में स्थापित करना है।

‘भगवत्पाद शंकराचार्य’ ने अत्यन्त भाव विभोर शब्दों में कहा है—

यद् गृहे पारदेश्यं स्यात् सहस्रं सिद्धि तद् गृहे।

किं जपः मंत्र सिद्धिं किं यत्र देवः प्रतिष्ठते॥

जिसके घर में आठों संस्कारों से युक्त पारद से निर्मित पारदेश्वर स्थापित है, उसे हजारों-हजारों सिद्धियां तो स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, उसे मंत्र-जप या साधना करने की क्या आवश्यकता है? सफलता के लिए उसे अन्य उपाय करने की जरूरत ही क्या है?

एक अन्य स्थान पर भगवत्पाद ने कहा है—

स्वर्णवर्षा च सौभाग्यं ऐश्वर्यं अभिवृद्धये ।
लक्ष्मी सहस्र रूपेण यद् गृहे पारदेश्वरः ॥

यदि घर में स्वर्ण की वर्षा निरन्तर देखना चाहें, यदि घर में अखण्ड सौभाग्य और ऐश्वर्य देखना चाहें, यदि सम्पन्नता और पूर्णता देखना चाहें, तो जीवन में मात्र एक उपाय भगवान पारदेश्वर को घर में स्थापित करना और उनका पूजन करना है ।

‘योगीराज गोरखनाथ’ ने पारदेश्वर को स्थापित करने के बाद उसके लाभ को और सफलता को अनुभव कर कहा है —

पारदेश्वर पूर्णं वै साक्षात् तत्राधिस्थितः ।
प्राप्यते सर्वं सिद्धिं वै न न्यूनं तद् गृहे क्वचित् ॥

तंत्र में सिद्धि पारदेश्वर के माध्यम से ही सम्भव है, प्रकृति को नियंत्रण में लेने की क्रिया पारदेश्वर प्रयोग ही है, जीवन में जो कुछ चाहें, जिस प्रकार चाहें, वह प्राप्त हो, इसका एकमात्र आधार पारदेश्वर का पूजन, प्रयोग और चिन्तन है ।

‘रावण’ ने पारदेश्वर का निर्माण कर उसकी साधना से अपनी नगरी को स्वर्णमयी बना कर यह सिद्ध कर दिया कि पारदेश्वर की साधना से सब कुछ सम्भव है ।

पारदेश्वर महादेव स्वर्ण वर्षां करोति यः ।
सिद्धिदं ज्ञानदं मोक्षं पूर्णं लक्ष्मी कुबेर यः ॥

रावण ने एक अन्य स्थान पर कहा है — मैंने यह अनुभव किया है कि पारदेश्वर के स्थापन, पूजन और साधना के आगे अन्य सभी साधनाएं, प्रयोग और उपाय तुच्छ हैं, केवल पारदेश्वर के स्थापन से ही स्वर्ण वर्षा, स्वर्ण निर्माण और स्वर्ण नगरी प्रक्रिया सम्भव है ।

‘कुबेर’ ने यक्ष को एक स्थान पर कहा है —

यत्र पारदेश्वरं देवं तद् गृहे लक्ष्मी च स्वयं ।
सुखं सौभाग्यं ऐश्वर्यं सिद्धिं प्राप्नुय पूर्णतः ॥

जहां पर भगवान पारदेश्वर स्थापित हैं, वहां मैं समस्त आयुधों के साथ स्थापित हूँ, जहां भगवान पारदेश्वर हैं, वहां समस्त रूपों में लक्ष्मी स्थापित है, जहां भगवान पारदेश्वर हैं, वहां सौभाग्य, धन, ऐश्वर्य, प्रभुता और पूर्णता है ।

एक स्थान पर स्वयं ‘इन्द्र’ ने कहा है —

दर्शने इन्द्र पदं प्राप्तं स्थापनमनंगं यौवनं ।
सौन्दर्यं, यौवनं लक्ष्यं वश्यं विश्वं सदा नरः ॥

पारदेश्वर के दर्शन से ही इन्द्र पद प्राप्ति सम्भव है, पारदेश्वर स्थापन से व्यक्ति कामदेव के समान सुन्दर और स्त्री गति के समान सौन्दर्यवती बन जाती है, जहां भगवान पारदेश्वर

हैं, और जो व्यक्ति इनका दर्शन करता है, वह नपुंसक रह ही नहीं सकता, उसके शरीर में जोश, प्रवाह, यौवन, तेजस्विता, और प्रभाव स्वतः व्याप्त रहता है।

यद गृहे पारदं लक्ष्मी पारदेश्वरमेव च।

अतुलं धन सम्पत्तिः भोगं मोक्षं तदावसेत्॥

जिस घर में पारद से निर्मित लक्ष्मी की मूर्ति हो, और अष्ट संस्कार युक्त पारदेश्वर स्थापित हो, वहां कई-कई पीढ़ियों तक अटूट धन-सम्पत्ति बनी रहती है, ऐसा व्यक्ति जीवन में भोग और मोक्ष दोनों पुरुषार्थ एक साथ प्राप्त करने में सफल होता है।

वस्तुतः पारदेश्वर के बारे में पारद ग्रंथों में इतना अधिक लिखा हुआ है, कि उन सब को इन पत्रों में समेटना कठिन है, परन्तु मेरा अनुभव यह रहा है कि वस्तुतः आठों संस्कार सम्पन्न पारद से पारदेश्वर का निर्माण या उसकी प्राप्ति और उनका घर में स्थापन जीवन का सांभाग्य है, लक्ष्मी की पूर्णता है, ऐश्वर्य और आनन्द का पूर्णरूप से साम्राज्य है।

★★★

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

द्वारा रचित

अप्सरा साधना	5/-	स्वर्ण सिद्धि	5/-
त्रिजटा अघोरी	5/-	उर्वशी साधना	5/-
भुवनेश्वरी साधना	5/-	सौन्दर्य	5/-
मैं बांहें फैलाये खड़ा हूँ	5/-	पारदेश्वरी साधना	5/-
हंसा! उड़हूँ गगन की ओर	5/-	श्री यंत्र साधना	5/-
सिद्धाश्रम	5/-	सनसनाहट भरा सौन्दर्य	5/-
तंत्र साधनाएं	5/-	मैं सुगन्ध का झोंका हूँ	5/-
हिप्नोटिज्म	5/-	गणपति साधना	5/-
जगदम्बा साधना	5/-	सरस्वती साधना	5/-
स्वर्ण प्रदायक तारा साधना	5/-	शक्तिपात	5/-
शिव साधना	5/-	बगलामुखी साधना	5/-

और ये अमूल्य ग्रंथ जो आपके जीवन की धरोहर हैं—

Meditation 240/- Kundalini Tantra 240/-

फिर दूर कहीं पायल खनकी 96/- ध्यान, धारणा और समाधि 96/-

निखिलेश्वरानन्द स्तवन 96/- कुण्डलिनी नाद ब्रह्म 96/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

. साधना ज्ञान में

रोचकता की

त्रिवेणी . अनूठी साधनाएं

. आकस्मिक धन प्राप्ति

. सम्मोहन . रोग निवारण

. ऋण मुक्ति . पौरुष प्राप्ति

. आयुर्वेद . ज्योतिष द्वारा

समस्या निवारण



साथ ही प्रत्येक

वार्षिक सदस्य

को उपहार में

देते हैं कोई एक दुर्लभ

यंत्र . . . सर्वथा निःशुल्क

उसके घर में या व्यापार

स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १८०/- डाक

व्यय १६/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर (राज.), फोन- ०२६१ ३२२०६

संरक्षक :- डॉ नारायण दत्त श्रीमाली